इस पुस्तक में जॉन टेलर गेट्टो अपनी उसी चिर-परिचित कहानी वाचन शैली में बताता है कि कैसे थोपी गई शिक्षा हमें यह विश्वास करने के लिए बाध्य करती है कि जानकारियों का ढेर, कुछ रटे हुए जुमले और स्कूल अध्यापक द्वारा ईनाम में दिए गये सितारे और हँसते-मुस्कुराते चेहरे ही बौद्धिक विकास है। कैसे हम सीखने को अर्थपूर्ण जीवन से जोड़ सकें, इसे हमेशा हतोत्साहित किया जाता है। गेट्टो आगे बताते हैं कि इस तरह का प्रशिक्षण, सबको एक जैसा बनाने का मुख्य हथियार है और जो नुकसान स्कूल करते है, वो सोची-समझी और चालाकी भरी साज़िश है।

यह पुस्तक कई लोगों की असली जिंदगी के उदाहरण सामने रखती है जो स्कूल रूपी पिंजरे की कैद से तब बाहर रहे जब हम स्कूल की मेज पर बैठकर या तो ऊंघ रहे थे या ब्लैक-बोर्ड से कुछ नोट्स उतार रहे थे। पुस्तक हमें यह भी बताती है कि किस तरह अपनी सोच और समझ के साथ बड़ा होने के लिए हमें व्यक्तिगत क्षमता की ज़रुरत होती है। इसे गेट्टो ''ओपन सोर्स लर्निंग'' कहते हैं, जो कि नियमों में बंधी हुई और सबके लिए एक-जैसी-शिक्षा से कहीं अधिक गुणवत्ता वाली होती है।

जॉन टेलर गेट्टो ने न्यूयार्क सिटी पब्लिक स्कूल में तीस वर्षों तक पढ़ाया है। उन्हें इस दौरान न्यू यार्क सिटी टीचर अवार्ड और न्यू यार्क स्टेट टीचर अवार्ड से भी पुरस्कृत किया गया था। शिक्षा में नई सोच को लेकर वे काफी लोकप्रिय वक्ता हैं और अपने व्याख्यानों के लिए उन्होंने पुरे उत्तर अमरीका में करीब 15 लाख मील की लंबी यात्राऐं की है। उनकी प्रलयकारी पुस्तक ''डंबिग अस डाउन'' की अंग्रेजी में अब तक दो लाख से भी ज्यादह प्रतियाँ छप चुकी हैं। हाल ही में सत्याग्रह की भावना से उन्होंने मानकीकृत परीक्षा को तोड़ने और शिक्षा प्रणाली से असहयोग करने के लिए एक आंदोलन की शुरूआत की है – परीक्षा पुस्तकों में यह लिखना कि *''मैं आपका टेस्ट नहीं लेना पसंद करूँगा।'' उनकी अन्य पुस्तकें हैं, ए डिफरेंट काइन्ड ऑफ टीचर, द अण्डरग्राउन्ड हिस्ट्री ऑफ अमेरिकन एजुकेशन और विपन्स ऑफ मास इन्स्ट्रक्शन, डंबिंग अस डाउन, मूढ़ बनाने का कारखाना।*